Estd. in 2008
"बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ"

मैं एक मनुष्य हूँ और जो कुछ भी मनुष्यता को प्रभावित करता है उसी से मेरा मतलब है।

– सरदार भगतसिंह

RNI: RAJBIL/2014/64287,
ISSUE (अंक)-2020-10

Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur

Jayoti Muhim

मासिक समाचार पत्र

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय को मिला 12B स्टेटस

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर को यूनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन के द्वारा 12B स्टेटस प्राप्त हुआ। निजी महिला विश्वविद्यालयों में ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, 12B स्टेटस प्राप्त करने वाला प्रथम महिला विश्वविद्यालय है। आयुष प्रोग्राम में 12B स्टेटस प्राप्त करने वाला यह राजस्थान का प्रथम विश्वविद्यालय है तथा ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय भारत के कुल 385 निजी विश्वविद्यालयो में से 9 वां विश्वविद्यालय है जिसे ये गौरव प्राप्त हुआ है।

विश्वविद्यालय को यूनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन के द्वारा 12B स्टेटस 23 सितम्बर 2020 के शुभ दिन को प्राप्त हुआ। इस मौके पर विश्वविद्यालय की चौयरपर्सन माननीया विदुषी गर्ग जी ने सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों, अध्यापकों और कर्मचारियों को शुभकामनाएं दी।

12B प्राप्त होने पर विश्वविद्यालय ने सभी छात्राओं को अपने अध्ययन, शोधार्थियों को शोध तथा सभी अध्यापको को इनोवेटिव प्रोजेक्ट्स के लिए गोवेर्मेंट ग्रांट्स प्राप्त करने हेतु आमंत्रित किया है।

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों को 12B मिलने पर नई उड़ान भरने का अवसर प्राप्त होगा। सरकारी अनुदान प्राप्त होने से छात्राये अपने उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर होगी, अध्यापको को इनोवेटिव प्रोजेक्ट्स के लिए गोवेर्मेंट ग्रांट्स प्राप्त करने का सुनहरा मौका मिलेगा।

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय एक मात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ एक छत के नीचे सभी पाठ्यक्रम उपलब्ध है। अब यहाँ विद्यार्थियों के लिए सरकारी अनुदान प्राप्त करने का सुनहरा अवसर मौजूद है।

जे.वी.एन. सचिन प्रताप सिंह

Jv'n Vidushi Garg
Chairperson

Congratulations

TO ALL ***Students, Parents, Teachers & Well Wishers of JVWU Fraternity,***
We accomplished our goal of 12 B Status

Admission Open 2020

Join University for Higher Education
to Apply for

RECEIVING GRANTS

from UGC & Central Government for
All Discipline Programs / Courses

प्रधान कार्यालय एवं प्रकाशन स्थल : ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, वेदान्त ज्ञान वैली, ग्राम-झरना, महलां जोबनेर लिंक रोड़, जयपुर-अजमेर एक्सप्रेस वे, जयपुर – 303122 e-mail : jpd@jvwu.ac.in

डॉ. पंकज गर्ग
संस्थापक एवं सलाहकार
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

यूजीसी से 12B दर्जा प्राप्त होने पर यूनिवर्सिटी के संस्थापक एवं सलाहकार माननीय डॉक्टर पंकज गर्ग जी का संदेश-

यह एक अथक प्रयास का परिणाम है। यह छात्रा और शिक्षकों के सपनों को परवान पर चढ़ाएगा। यूजीसी से 12B स्टेटस प्राप्त करने से यूनिवर्सिटी को गवर्नमेंट ग्रांट्स प्राप्त होंगी। निजी विश्वविद्यालयों की संख्या 356 है और इससे बहुत गौरवान्वित महसूस करते हैं कि निजी विश्वविद्यालयों में इससे पहले 8 विश्वविद्यालयों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ और हम 9 वे स्थान पर हैं जिन्हें यह दर्जा प्राप्त हुआ है। छात्राएं कभी-कभी अपनी आर्थिक समस्या के कारण या प्रोत्साहन नहीं मिलने के कारण अपनी शिक्षा को बीच में ही रोक देती है ऐसे में हर व्यक्ति अनुदान की तरफ देखता है। आज इस अनुदान को प्राप्त करने के लिए 12B का स्टेटस प्राप्त करना बहुत जरूरी है। अब छात्राएं हायर एजुकेशन को प्राप्त करने के लिए किसी की तरफ मुंह नहीं देखेंगे उन्हें विश्वविद्यालय के माध्यम से अपनी हायर एजुकेशन अपने प्रोजेक्ट अपने शोध का कार्य करने के लिए सरकारी अनुदान प्राप्त होगा अगर वे भविष्य में आगे पढ़ना चाहती हैं। 12वीं के बाद अब वह प्रोजेक्ट पर काम कर पाएंगे। फैकेल्टी मेंबर अपने प्रोजेक्ट के द्वारा राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएंगे। यह बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए कि एक एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के आसपास सूखा पड़ा हो यह बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए कि एक विश्वविद्यालय के आसपास अनपढ़ लोग रहते हो यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि अस्पताल के आसपास कोई भयंकर बीमारी फैली हो हमें सबसे पहले अपने खुद के क्षेत्र का विकास करना है और उस विकास के लिए जो हमारे पास हुनर है हमने 5 गांव गोद ले रखे हैं हम समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं हम यहां टूरिज्म प्रोग्राम शुरू करने जा रहे हैं। 12B में कम से कम 3 5 - 50% प्रोजेक्ट ऐसे बनाए जाएंगे जो कि लोकल कम्युनिटी के विकास के लिए होंगे।

साक्षात्कार

डॉ. नरेन्द्र शेखावत - असिस्टेंट प्रोफेसर फैकल्टी ऑफ आयुर्वेदिक साइंस

प्रश्न.1 वर्तमान समय में आयुर्वेदिक साइंस के अध्ययन का क्या स्कोप (क्षेत्र) है ?

उत्तर- आयुर्वेदिक साइंस में बी.ए.एम.एस. करने के उपरांत छात्राएं क्लिनिकल प्रेक्टिस कर सकती हैं, और आयुर्वेदिक फार्मेसी भी खोल सकती हैं। इसके साथ-साथ छात्राएं सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में रिसर्च ऑफीसर, एडमिनिस्ट्रेटिव वर्क कर सकती हैं।

प्रश्न.2. ऐसी कौनसी आयुर्वेदिक औषधियां हैं जिन्हें हम चिकित्सीय सलाह के बिना उपयोग में ले सकते हैं ?

उत्तर- यहां हम कहना चाहेंगे कि बिना चिकित्सकीय परामर्श के बिना कोई भी औषधि नहीं लेनी चाहिए फिर भी हम सितोपलादि चूर्ण, तालीसादि चूर्ण और लिव-52 सिरप को आवश्यकता पड़ने पर ले सकते हैं लेकिन उचित मात्रा में।

प्रश्न.3. आयुर्वेदिक साइंस में क्या ऐसा कोई रसायन (इम्यून मोड्यूलर) है जो किसी व्यक्ति द्वारा लिया जा सकता है ?

उत्तर- वयस्कों के लिए च्यवनप्राश, बच्चों के लिए स्वर्णप्राशन, त्रिफला चूर्ण, अश्वगंधा, शतावरी आदि रसायन ले सकते हैं।

प्रश्न.4. विश्वविद्यालय का उपक्रम सूर्यांश आरोग्यशाला पहला प्राइवेट अस्पताल है जो कि 'जननी सुरक्षा योजना' के अन्तर्गत आता है ऐसे में आस-पास के ग्रामीणों को क्या लाभ मिलता है ?

उत्तर- ग्रामीण महिलाओं को जननी सुरक्षा योजना के तहत अनेक लाभ हैं इसमें प्रसूताओं (डिलीवरी) को पच्चीस सौ रुपये प्रदान किये जाते हैं। यहां पर प्रसूता का उचित स्त्री रोग विशेषज्ञ (गोयनोकोलोजिस्ट) द्वारा इलाज किया जाता है जिससे जच्चा और बच्चा की उचित देखभाल हो सके और आवश्यकता होने पर इलाज किया जाता है। इस योजना के माध्यम से महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान आहार-विहार, टीकाकरण, मासिक शारीरिक जांच (मंथली हैल्थ चौक अप) के साथ-साथ नवजात बच्चों की इनबोर्न समस्याओं को दूर किया जाता है।

प्रश्न.5. आयुर्वेदिक चिकित्सा के उपपोग करने हेतु आप 'ज्योति मुहिम' के हमारे पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

उत्तर- पाठकों को हम यह कहना चाहते हैं कि हमारे आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति हमारे पूर्वजों की पद्धति है इसके उपयोग से रोग जड़मुक्त हो जाता है लेकिन अधिकतर लोग तुरंत लाभ लेने के लिए एलोपैथी पद्धति की ओर चले जाते हैं जिसके अपने साइड इफैक्ट हैं जबकि आयुर्वेदिक चिकित्सा में साइड इफैक्ट तब तक नहीं हो सकता जब तक कि आप आयुर्वेदिक औषधि को बहुत अधिक मात्रा में और गलत तरीके से नहीं लेते।

साक्षात्कार

डॉ. तुषार कांत,

कंसल्टेंट साइकाइट्रिस्ट, डिपार्टमेंट ऑफ मेंटल हैल्थ एंड बिहेवियरल साइंस, फोर्टिस हॉस्पीटल, जयपुर

साक्षात्कारदाता- डॉ. तुषार कांत, कंसल्टेंट साइकाइट्रिस्ट, डिपार्टमेंट ऑफ मेंटल हैल्थ एंड बिहेवियरल साइंस, फोर्टिस हॉस्पीटल, जयपुर साक्षात्कारकर्ता-जे.वी.एन. प्रीती, बी.ए. (जर्नलिज्म), पत्रकारिता विभाग।

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में आपका बहुत बहुत स्वागत है। विश्ववद्यालय के ज्योति मुहिम समाचार पत्र से मैं प्रीती, (बी.ए.जर्नलिज्म) आपसे स्ट्रेस मैनेजमेंट विषय पर बातचीत करना चाहती हूँ।

प्रश्न 1. सर, सरल शब्दों में जानना चाहेंगे कि स्ट्रैस क्या है ? इससे समाज पर क्या प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है विशेषतौर पर विद्यार्थी जीवन में।

उत्तर – लाइफ में जब भी कोई बदलाव आते है इसकी वजह से शारीरिक मानसिक और भावनात्मक (इमोशनली) रूप से बदलाव होते हैं ये जो बदलाव आते है उन्ही को हम स्ट्रेस कहते है अगर स्ट्रेस जरूरत से ज्यादा हो जाये तो ये हमारे लाइफ के बहुत सारे एरियाज को इफेक्ट करता है जैसे हमारे वर्क प्लेस में, हमारे एकेडमिक्स ग्रोथ में, पर्सनल ग्रोथ में भी फर्क पड़ता है। विद्यार्थी जीवन में हम देखते हैं कि इन दिनों किसी कोर्स में एडमिशिन लेने से लेकर जॉब मिलने तक का की अवधि में काफी स्ट्रैसफुल रहती है ऐसे में जॉब मिलने में नाकाम छात्र-छात्राओं द्वारा उठाया गया गलत कदम पूरे समाज को झकझोर देता है विद्यार्थी के गलत कदम से वह स्वयं और उसका परिवार, नाते-रिश्तेदार और पड़ोसियों तक में एक नकारात्मक संदेश जाता है जिससे समाज का विकास प्रभावित होता है। ऐसे में किसी विद्यार्थी के जीवन में जब कभी हताशा आए तो वो निसंकोच मनोचिकित्सक से परामर्श अवश्य लें।

प्रश्न 2. बच्चों से लेकर वृद्ध लोगों तक सभी को किसी न किसी बात को लेकर तनाव है ऐसे में उनको क्या उपाय करने चाहिए जिससे ये स्ट्रेस कम हो सके ?

उत्तर – देखो लाइफ जो है हमेशा स्ट्रेस्फुल ही रहती है बच्चा पैदा होता है वहां से लेकर मरने तक स्ट्रेस ही स्ट्रेस है वो अलग अलग तरह के होते है जैसे स्कूल में स्ट्रेस अलग तरह के होते है जब आप कॉलेज में आते हो तो आपका स्ट्रेस अलग हो जाता है कम्पिटिशन एग्जाम का फिर जॉब लगने पर तो तनाव और बढ़ जाता है तो लाइफ में हर टाइप के स्ट्रेस तो आएंगे ही आएंगे। एक ओर हम देखते हैं कि स्ट्रेस को हम इग्नोर नहीं कर सकते अब उस स्ट्रेस की वजह से जो हम खुद परसीव कर रहे है उसको हम नजरअंदाज कर सकते है उसके दुष्प्रभाव को हम हटा सकते है। किसी भी तरह के स्ट्रेस से दूर रहने के लिए हम योग, मैडिटेशन करें, सात से आठ घंटे की नींद जरुर लें और आत्मचिंतन अवश्य करें। यह सब करने से स्ट्रेस से उत्पन्न होने वाली नकारात्मकता को खत्म किया जा सकता है।

प्रश्न 3. जिस तरह सभी व्यक्ति एक समान नहीं होते हैं तो क्या ये स्ट्रेस भी पर्सन टू पर्सन डिपेंड करता है ?

उत्तर – बिल्कुल, स्ट्रेस मैन टू मैन डिपेंड करता है वास्तव में स्ट्रेस एक इंटरनल फैक्टर होता है जो कि कैमिकल ग्रेवन होता है जो मनुष्य के जीन्स में होता है यानि ये हमें पेरेंट्स से मिलता है कुछ लोगों में उनकी सामाजिक, आर्थिक और अन्य परिस्थितियों के अनुसार स्ट्रेस भी होने लगता है। यही कारण है कि एक माता-पिता के दो बच्चों में चिंता का स्तर भिन्न-भिन्न हो सकता है। यही कारण है कि माता या पिता के बीमार होने पर एक बच्चा तो अधिक स्ट्रेस लेता है तो दूसरे को कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। वैज्ञानिक रूप से देखें तो यह सब शरीर के नेरो कैमिकल यानि सीरो टॉनिक मात्रा पर निर्भर करेगा जिसके शरीर में नीरो टॉनिक अधिक होगा वह आसानी से स्ट्रेस को हैंडल कर लेगा जबकि कम सीरो टॉनिक वाला व्यक्तिस्ट्रेस को हैंडल नहीं कर पायेगा।

प्रश्न 4. देश में विद्यार्थियों और किसानों की आत्महत्याओं की खबरें आम होती जा रही हैं इसका मुख्य कारण क्या मानते हैं ?

उत्तर- यह सत्य है कि इन दिनों किसान और विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या के मामले बढ़ रहे हैं इसके पीछे एक्सटर्नल फैक्टर वर्क करता है। किसानों को सबसे अधिक तनाव फसल के खराब होने और ऋण चुकाने का होता है ऐसे में फसल बर्बादी से परेशान किसान ऋण चुकाने में असमर्थ होता है और अंततः वह स्वयं की जिंदगी को खत्म करने के फैसला लेने पर मजबूर होता है। इसी तरह से पढ़ाई और माता-पिता, समाज और अपने मित्रों में अपनी साख बनाने में नाकाम और खुद से अधिक अपेक्षाएं करने के कारण विद्यार्थी भी आत्महत्या कर रहे हैं। लेकिन यदि हम इन आत्महत्याओं को रोकना चाहते हैं तो हमें अपने बच्चों को हर छोटी-बड़ी हरकत पर नजर रखनी चाहिए। उनके साथ स्नेह और विश्वास का रिश्ता रखना चाहिए।

प्रश्न 5. सर ऐसा देखा जाता है कि एक मिडिल फैमिली का व्यक्ति साइकाइट्रिस्ट के पास जाने में संकोच करता है क्यों ?

उत्तर- हां, यह अक्सर देखा जाता है कि निम्न मध्यम वर्ग किसी भी मानसिक बीमारी के लिए अंत तक मनोचिकित्सक के पास जाने में संकोच करते हैं इसके पीछे का मुख्य कारण है समाज में मानसिक बीमारी के प्रति लोगों की सोच। आज भी हम देखते हैं कि मनोचिकित्सक को सामान्य लोग पागलों का डॉक्टर और अस्पताल को पागलखाना कहकर सम्बोधित करते हैं और इससे समाज में गलत संदेश जाता है कि कोई पागलों के डॉक्टर में क्यों जाए यदि वह जाता है तो लोग उसे पागल समझेंगे इत्यादि। चिकित्सा जगत में भी अब पागल और पागलखाने जैसे शब्दों को जगह पर मानसिक रोगी और मनोचिकित्सक का उपयोग होता है जिससे सोशल टैबू को खत्म किया जा सके। फिर भी हम देखते हैं कि जागरुकता के अभाव में लोग मनोचिकित्सक से सलाह लेने में संकोच करते हैं। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 6. सर अंतिम प्रश्न में जानना चाहेंगे कि आप हमारे ज्योति मुहिम समाचार पत्र के पाठकों और विश्वविद्यालय की छात्राओं के लिए स्ट्रैस फ्री रहने का क्या संदेश देना चाहेंगे ?

उत्तर – ज्योति मुहिम के पाठकों और विश्वविद्यालय की छात्राओं के लिए कहना चाहेंगे कि लाइफ में स्ट्रेस आना स्वाभाविक है उसको हम अवॉयड कर सकते हैं इसके लिए सबसे इम्पोर्टेन्ट है कि हम रात की नींद छह से आठ घंटे लें। दूसरा मैडिटेशन अवश्य करें सुबह-शाम प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट एक्सरसाइज करें। इसके लिए आप योग, मॉर्निंग या ईवनिंग वॉक या फिर फास्ट रनिंग भी कर सकते हैं तो आप देखेंगे की आपका मन काफी हद तक शांत हो जायेगा और इससे स्ट्रेस को प्रभावित करने वाला नेरो कैमिकल सीरो टॉनिक में वृद्धि होती है। इसके साथ-साथ एक अच्छा फ्रेंड सर्किल बनाये एक अच्छा वातावरण क्रिएट कर ताकि हम अपनी स्ट्रेस देने वाली बातों को भी शेयर कर सकें। इससे हमें कभी भी स्ट्रेस प्रभावित नहीं करेगा।

जे.वी.एन. प्रीती,

बी.ए. (जर्नलिज्म), पत्रकारिता विभाग

RNI: RAJBIL/2014/64287,
ISSUE (अंक)-2020-10

मोदी के जन्मदिवस पर बनाया गया राष्ट्रीय बेरोजगारी दिवस

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर हर साल लोग उन्हें ढेर सारी बधाईया देते है। वही इस साल उनके 70वे जन्मदिवस पर बेरोजगारी को लेकर लोगो ने अपना गुस्सा जाहिर किया और उनके जन्म दिवस को लोगों द्वारा राष्ट्रीय बेरोजगारी दिवस का नाम दिया गया। लोगों ने ट्विटर एवं अन्य सोशल साइट्स पर मोदी जी के जन्म दिवस को बार-बार राष्ट्रीय बेरोजगारी दिवस कहा और ''जब से आयी मोदी सरकार, करोड़ो युवा हुए बेरोजगार'' इस तरह के नारे लगाए।

पिछले कुछ महीनो से तो बेरोजगारी दर बढ़ती ही जा रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था निगरानी केंद्र (सीएमआईई) की रिपोर्ट के अनुसार मार्च 2020 में लॉकडाउन होने के बाद कुल बेरोजगार दर 23 फीसदी से भी अधिक हो गयी है। 2019 के आंकड़ों के अनुसार भारत की बेरोजगारी दर 5.36%, 2018 में 5.33%, 2017 में 5.42%, 2016 में 5.5% था। पुदुचेरी में 75.8% की उच्चतम बेरोजगारी दर दर्ज की गई।

बेरोजगारी दर को इस तरह से बढ़ता देख कुछ दिन पहले भी स्टूडेंट्स और टीचर्स द्वारा किया गया 'युवा बेरोजगारी आंदोलन' खूब ट्रेंडिंग में आया। 17 सितम्बर 2020 को प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर लोगों ने ट्विटर के माध्यम से अपनी समस्या का समाधान करने की बात कही और लोगों ने कहा की मोदी जी बेरोजगारी मुद्दे को छोड़कर बाकि सब मुद्दों पर बात करते है जबकि बेरोजगारी एक गंभीर विषय है जो केवल बेरोजगार लोगों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए घातक है, देश के विकास के लिए इस समस्या का हल करना बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है, इस तरह के भयानक आंदोलन को देखते हुए सरकार को इस विषय पर जल्द से जल्द गंभीर रूप से सोचने की आवश्यकता है वरना यह सोशल मीडिया द्वारा किया गया आंदोलन बड़ा रूप लेकर देश के लिए खतरा बन सकता है।

जे.वी.एन. प्रीति

पर्दा प्रथा

पर्दा प्रथा सदियों से चली आ रही एक अन्धविश्विसनिय परम्परा है जिसमे औरतो को पर्दे के पीछे रहने के लिए विवश किया जाता है। समाज के लोग सोचते है जो औरतें परदे में रहती हैं वहीं चरित्रवान हैं उन्ही के अंदर शर्म हैं। लोग औरतों का चरित्र उनके कपड़ो से जोड़ते हैं।

अगर हम बात करे ईसा मसीह के युग की तो उस समय पर्दा प्रथा जैसी कोई परम्परा देखने को नहीं मिलती है। महाभारत, रामायण काल में भी पर्दा प्रथा जैसे कोई रीति रिवाज नहीं थे। उस समय औरतें पूरी तरह से स्वतंत्र थी लेकिन मुगल काल तक आते-आते पर्दा प्रथा जैसी परंपराएं देखने को मिली। इससे पहले औरतों के साथ छल-कपट जैसी घटनायें तो देखने को मिलती हैं परन्तु रेप जैसी घटनाओं का नामो-निशान नहीं मिलता। मतलब जैसे-जैसे पुरुषो के दिमाग में गंदे ख्याल आने लगे वैसे ही औरतों की आजादी छीन ली गयी।

लोग समझते हैं की औरत अगर परदे में रहेगी। और उनका तन पूर्ण तरीके के ढका रहेगा तो उनकी इज्जत-आबरू पर कोई आंच नहीं आएगी, पुरुषों की गन्दी नजर से वो बची रहेंगी। आधुनिक समय में भी इतने पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी लोगो की यहीं सोच है शिक्षा के साथ-साथ उनकी सोच में बिल्कुल बढ़ोतरी नहीं हुई। लोग नहीं जानते की ''शर्म के लिए तो पर्दा ही काफी है वरना इशारे तो घूँघट में भी होते हैं''। समाज में जितने भी गंदे काम यानि रेप जैसी घिनौनी घटनाये सिर्फ और सिर्फ पुरुषों की वजह के होते हैं शर्म तो पुरुषों को आनी चाहिए और शर्म का पर्दा महिलाओं को नहीं बल्कि पुरुषों को आनी चाहिए।

हमारे समाज में गलती पुरुष करे या औरत परन्तु दोषी केवल औरत को ही ठहराया जाता है उदहारण के लिए अगर किसी लड़की का रेप हो जाता है तो कानूनी रूप से तो लड़के को दोषी ठहराकर उसे सजा दी जाती है परन्तु समाज के लोग लड़की पर ही ताना कसते है उसे चौन से जीने नहीं देते। लोग कहते है की लड़कियों को अपनी सीमा में रहना चाहिए उन्हें पूरा तन ढकने वाले कपड़ें पहनने चाहिए ताकि पुरुषों की गन्दी नजर उन पर ना पड़े और रेप जैसी घिनौनी हरकत उनके साथ न हो अंततः पर्दा प्रथा जैसी भयानक परंपरा रेप जैसे घिनौनी अपराधों की समस्या का हल नहीं है बल्कि शर्म तो पुरुषों की आँखों में होनी चाहिए।

© सर्वाधिकार सुरक्षित
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक डॉ. पंकज गर्ग द्वारा लक्ष्मी ऑफसेट, G-1 मधुबन कॉलोनी टोंक फाटक जयपुर-302018 से मुद्रित एवं ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, वेदान्त ज्ञान वैली, ग्राम-झरना, महलां जोबनेर लिंक रोड़ जयपुर - अजमेर एक्सप्रेस वे जयपुर-303122 से प्रकाशित।
घोषणा एवं शर्ते : समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र केवल जयपुर होगा। 'Jayoti Muhim (ज्योति मुहिम)' में प्रकाशित लेखों, चित्रों एवं अन्य सामग्री से सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। कॉपीराइट उल्लंघन की स्थिति में केवल संबंधित लेखक का ही दायित्व होगा।